गरीब निवाज 531

रात्री क्लास ओमशान्ति 3-1-68

बच्चों को यह (ल०ना०) देखने से ही बाप और वर्सा याद आना चाहिए। जानते भी हैं बाप के पास बैठे यह वर्सा ले रहे हैं। दूसरा कुछ याद नहीं करना है। बाप को याद करना और विश्व का वर्सा पाना है। तकलीफ कुछ भी नहीं। अन्तर्मुख हो बाप और वर्सा को याद करना है। यह भी चान्स पहले मिलता है गरीबों को शाहुकार नामी-ग्रामी अभी आ जाये तो रोब लेशन हो जाये। अभी कोई 10-20 लाख की आसामी आये नहीं सकेंगे। न नामी-ग्रामी सन्यासी ही आवेंगे। नामी-ग्रामी का तो आवाज़ झट फैल जाता है। परन्तु ड्रामा प्लेन अनुसार यह पिछाड़ी में होगा। जो प्रजा में चले जाये। पिछाड़ी में ऐसे की जरूर नहीं रहती है। इसलिए गरीबों को चांस अच्छा है। नामी-ग्रामी अभी नहीं आवेंगे। अभी साधारण अबलाएं ही आवेंगे। तुम अपना वर्सा पाये रहे हो। पिछाड़ी को राजाई का वर्सा मुश्किल पा सकेंगे। तो बच्चों के पुरुषार्थ करना चाहिए। बाप हैं भी गरीब निवाज़। भारत भी गरीब है इसलिए कल्प कल्प भारत में ही आता हूं। पहले2 गरीब साधारण ही उठाते हैं। शाहुकार लोग समझते हैं हमारे लिए यहां ही स्वर्ग है। तुम जो बहुत शाहुकार थे सो अब नीचे आ गये हो। बेगर अर्थात जिसके पास कुछ भी नहीं है। शिवबाबा के पास कुछ है? ब्रहमा की कोई चीज़ नहीं। तुम सब कुछ शिवबाबा को देते हो। शिवबाबा का ही है। मेरा जो कुछ था सो सब खत्म कर दिया। मेरे को कोई देता नहीं है। शिवबाबा की चीज़ है। वह दाता है। मेरा क्या है? मैं भी तो ट्रस्टी हूं। बच्चों की वस्तु बच्चों के ही काम में लगाई जाती है। बाप अपना धन बच्चों पर कुर्बान करते हैं ना। बहुत ही समझने की बातें हैं। बाप भी हैं, वर्सा भी है तो जरूर हमको पावन बनना है। बड़ी बात नहीं। बहुत ही सहज है। युध भी इसमें ही है। याद की यात्रा ही घड़ी2 भूल जाते हैं। नालेज की लड़ाई नहीं होती। याद में ही लड़ाई चलती है। तुम याद करना चाहते हो बाबा को। वह समझती है मेरा ग्राह क जाता है तो खेंचने की कोशिश करती है। यह पढ़ाई ऐसी है तो घर बैठे भी पढ़े, रास्ते में पढ़े। जहां चाहो वहां बैठे याद करो। गायन भी है ना सिमर सिमर सुख पाओ। कल-कलेश मिटे सब तन के सो मन के। मन के सो तन के, वह जीवन मुक्ति पद पावे। परिचय मिला। अब उनको याद करना है। जो बाप को पहचानते ही नहीं तो याद कैसे करेंगे। कितनी छोटी2 बातें हैं। फिर भी भूल जाते हैं। बाप कितना सिम्पल बात बताते हैं। अच्छी बुधि है तो वर्सा अच्छा पा सकते हैं। रहते भी हैं, सेवा भी यज्ञ की करते हैं।

तुम चलते फिरते याद की यात्रा पर रहते हो। इसमें पन्डे की भी दरकार नहीं। कहां भी बैठे याद में रह सकते हो। फिर पढ़ाई पर मार्कस होती हैं। दुनिया में सब हैं मानव मत। श्रीमत तो किसको मिलती नहीं है। मनुष्य मनुष्य को मत वर्सा नहीं दे सकते हैं। वर्सा बाप ही देते हैं। बेहद का बाप। बेहद का वर्सा। बेहद की खुशी रहती है। जितना अच्छी रीत याद में रहेंगे उतना अच्छा वर्सा मिलेगा। वह सब हैं भक्ति मार्ग के गुरु। ज्ञान मार्ग का सद्गुरु तो एक ही है। वह ही पतितपावन हैं। बाकी सभी हैं भक्ति मार्ग के गुरु। यह पाईन्ट अच्छी तरह नोट कर दो। अनेक हैं भक्ति मार्ग के गुरु। भक्ति माना दुर्गति। सीढ़ी उतरनी ही पड़ती है। "न बिगर गति तो हो नहीं सकती। बाप ही आके सेकन्ड में गति सद्गति देते हैं। पोप आदि भी गाड को याद करते हैं। क्योंकि उनके बिगर शान्ति कोई कर न सके। भल कर के कहेंगे हम कोशिश करते हैं शान्ति करने लिए। यह तो सिर्फ एक लड़ाई को बन्द करने लिए करते हैं परन्तु यहां तो कितना झगड़ा है। महाभारत लड़ाई लगी थी उस समय जरूर भगवान भी होंगा। जो नई दुनिया स्थापन करता है। रूहानी बाप तुमको रूहानी यात्रा भी सिखला रहे हैं। यह रूहानी यात्रा एक ही बार होती है। जिस्मानी यात्रायें तो आधा कल्प चलती है। अभी तुमको रूहानी यात्रा सिखलाई जाती है। फिर दोनो बन्द हो जायेंगे। अच्छा मीठे मीठे रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप व दादा याद प्यार व गुडमार्निंग नाईट।

रूहानी बच्चों को नमस्ते। नमस्ते।

-:*****ओमशान्ति*****:-